# कृषि विभाग–पौधा संरक्षण
# पौधा संरक्षण सामयिक सूचना

अंक– 10/2014–15

## रब्बी फसलों पर वर्तमान समय में सामयिक उपचार

वर्तमान समय में मौसम के उतार–चढ़ाव के कारण किसान भाईयों को अपनी खड़ी फसलों पर खास ध्यान देने की जरूरत है। वर्तमान समय में रब्बी मौसम की चना, मटर, मसूर, सरसों, गेहूँ मक्का आदि विभिन्न सब्जी तथा आलू की फसलें खेतों में प्रमुख रूप से हैं।

**आलू का झुलसा रोग** :– आलू में लगने वाला झुलसा रोग दो तरह का होता है।

(क) आगात झुलसा रोग (ख) पिछात झुलसा रोग।

**आगात झुलसा रोग** :– आलू में यह रोग **अल्टरनेरिया सोलेनाई** नामक फफूँद के कारण होता है। प्रायः निचली पत्तियों पर गोलाकार धब्बे बनते है, जिसके भीतर में कंसेन्ट्रीक रिंग बना होता है। धब्बा युक्त पत्ती पीला पडकर सूख जाती है। बिहार राज्य में यह रोग देर से लगता है, क्योंकि इसके लायक बातावरण देर से बनता है। जबकि ठंढे प्रदेशों में इस फफूँद का उपयुक्त वातावरण पहले बनता है।

**प्रबंधन** :– फसल में इस रोग के लक्षण देखते ही जिनेव 75% घुलनशील चूर्ण 2.5kg प्रति हे0 या मैंकोजेब 75% घु0 चू0 2kg प्रति हे0 अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50%घु0 चू0 3kg/हे0 की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

**पिछात झुलसा** :– आलू में यह रोग **फाइटोपथोरा इन्फेस्टेन्स** नामक फफूँद के कारण होता है। वायुमंडल का तापमान 10 डिग्री से 19 डिग्री सेल्सियस रहने पर आलू में पिछात झुलसा रोग के लिए उपयुक्त वातावरण होता है। इस रोग को किसान आलू का आफत भी कहते हैं। फसल में रोग का संक्रमण रहने पर तापमान 10 डिग्री से नीचे, कुहासा लगा रहने, बदली छाने तथा वर्षा हो जाने पर बहुत कम समय में यह रोग फसल को बर्वाद कर देता है। इस रोग से आलू की पत्तियॉ किनारे से सुखती है।

**प्रबंधन** :– वर्तमान मौसम में फसल की सुरक्षा के लिए किसान 10–15 दिन के अन्तराल पर मैंकोजेब 75% घुलनशील चूर्ण 2kg प्रति हे0 या जिनेब 78% घु0 चू0 का 2.5kg /हे0 की दर से पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें। संक्रमित फसल में मैंकोजेब एवं मेटालैक्सिल अथवा कार्बेन्डाजिम एवं मैंकोजेब संयुक्त उत्पाद का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

**मिर्च फसल** :– इसी तरह वायुमंडलीय तापमान कम रहने और, कुहासा छाये रहने पर मिर्च फसल में फफूँद जनित डायबैक रोग (Colletotrichum capsici ) लगता है। जिसमें पौधों की फुनगी शुरू में उपर से नीचे की ओर गलने लगती है, जो बाद में काला पड़ जाता है, और सूख जाता है। आर्द्रता अधिक होने पर रोग लगने की संभावना बढ़ जाती है। पके फलियों पर छोटा धब्बा बनता है। जो धीरे–धीरे बड़ा और सफेद हो जाता है। कुहासा वाले वातावरण में यह तेजी से फैलता है।

**प्रबंधन** :– (i) ग्रसित खेत की उपज का व्यवहार बीज के रूप में न करें।

(ii) ट्राइकोडर्मा से बीज एवं बीज स्थली का उपचार करें।

(iii) खड़ी फसल में मैंकोजेब 75% घुलनशील चूर्ण का 2 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।

(iv) इस रोग से सुरक्षा हेतु :– कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% घुलनशील चूर्ण 3kg /हे0 की दर से पानी में धोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर मौसम साफ होने तक छिड़काव करें।

**दलहन फसल** :– वर्तमान में वर्षा हो जाने एवं निम्न तापकम; उच्च सापेक्षिक आर्द्रता और मिट्टी में नमी ज्यादा हो जाने पर रब्बी की दलहनी फसलों पर फफूँद जनितरोग **हरदा और स्टेमफिलियम** ब्लाइट नामक रोग का आक्रमण होने की संभावना प्रबल है। हरदा रोग में पत्तियों, तना एवं फलियों पर भूरे रंग के छोटे–छोटे उभार (फफोले) बन जाते हैं, बाद में फफोले काले हो जाते है। पत्तियॉ झड़ जाती है और पौधा चिपचिपा हो जाता है। इस रोग का फसल पर जितना आगात आक्रमण होता है, उतनी ही अधिक क्षति होती है।

**स्टेमफिलियम ब्लाईट** में पत्तियों पर बहुत ही छोटा एवं काला पीन प्वाइंट जैसा धब्बा बनता है. और पत्ती हल्की पीली होकर गिरने लग जाती है। यह रोग पौधों के निचले भाग से शुरू होकर उपर की तरफ बढते जाता है, और फसल में एक जगह से शुरू होकर चारों ओर फैलता है। इन रोगों का प्रकोप होने पर उत्पादन में 80% तक की क्षति हो सकती है। इन रोगों में सुरक्षात्मक उपचार ही कारगर हो पाता है, इसलिए किसान अपनी फसल पर रोग के आक्रमण से पूर्व ही सुरक्षा के तौर पर मैंकोजेब 75% घुलनशील चूर्ण 2kg या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% घु0 चू0 3 kg /हे0 की दर से 15 दिनों के अन्तराल पर मौसम साफ होने तक